368/20/11/14

Name of the scholar - Nisha Nag

Supervisor - Dr. D.K.Shakya

Co-supervisor - N.A.

Department - Hindi

Title - Rajnitik Sandharbon ki Hindi Kavita; Antrvastu aur Roop ka Adhyan.(1960-1990)

ABSTRACT (शोध सार)

साहित्य के यथार्थ और समाज के साथ राजनीति का प्रश्न भी जुडता है। आधुनिक मानवीय चेतना का विकास,समाज और राजनीति की परस्पर निर्भरता को स्वीकार कर उसके संबंधो की समझ से हुआ है ।इस युग में कविता को राजनीतिक स्थिति,परिवेश तथा छद्म के मध्य अपनी सक्रिय भागीदारी स्वीकारनी पडी है| स्वतंत्रता के बाद कविता में राष्ट्रीय साँस्कृतिक स्वर फीके पड गए और ठेठ राजनीतिक संदर्भ की कविता उभरकर सामने आई । कविता और राजनीति का संबंध निरंतर विवाद का रहा है। अपने युग में घटित विविध राजनीतिक घटनाओं और चरित्रों से कवि प्रभावित होता है ।कविता के क्षेत्र में यह प्रश्न कवि की अनुभूति का है । कविता ने राष्ट्रीय तथा अंतर्राष्ट्रीय सभी प्रकार की राजनीतिक घटनाओं को अंतर्वस्तु का विषय बनाया है । राजनीतिक संदर्भ की कविता राजनीतिक घटनाओं,चरित्रों, समसामयिक स्थितियों का महज इतिवृतात्मक वर्णन नहीं है अपितु आम जन के राग-हास ,शोक-क्रोध की भी अभिव्यक्ति है ।समसामयिकता से जुडकर यह कविता कालातीत भी है। यह केवल विद्रोह या विरोध की कविता ही नहीं है बल्कि कहीं कहीं प्रकृति या प्रेम पर लिखी हुई कविता शाँत स्वर में भी राजनीतिक आशय वहन करती है ।राजनीतिक संदर्भ की अधिकतर कविता विश्लेष्णोन्मुख और विचाराश्रित मानी जाती रही है किंतु यह मात्र यांत्रिक कविता नहीं है ।विचार का मानवीय और संवेदना पूर्ण पक्ष ही यहाँ प्रधान है ।कविता में राजनीतिक विचारों की भूमिका और उनका अंतर्वस्तु में परिवर्तित होना कवि की रचनात्मकता

का प्रश्न है ।राजनीतिक संदर्भ की कविताओं में राजनीतिक घटनाएँ कहीं सीधे सीधे रूप में आई हैं,कहीं घटनाओं का समवाय है,कहीं ये घटनाएँ बिम्ब अथवा प्रतीक में बदल गई हैं। राजनीतिक संदर्भ की कविता की शिल्प संगठन और रूप के स्तर पर भी कई प्रश्नों से जूझती हुई दिखाई देती है ।कहीं सपाट गद्यात्मक भाषा और कहीं परंपरागत रूपों में यह कविता रची जाती रही।जीवन धर्मिता प्रत्यक्ष अनुभव का विस्तार यथार्थ दर्शन की विविधता,स्थानीय रंग में जीवंत भाषा ,परिवर्तन की कामना करने वाली ऐतिहासिक जीवन दृष्टि, साहसपूर्ण कल्पना इन सबके सँयोग से श्रेष्ठ राजनीतिक संदर्भ की कविताएँ रची गई हैं ।राजनीतिक संदर्भ की कविता जनजीवन से जुडी हुई है ।यह नारा या प्रचार भी है परंतु सिर्फ नारे या प्रचार तक ही सीमित नहीं है ।यह कविता सीधा हथियार नहीं है बल्कि विशिष्ट सृजन भी है।राजनीतिक संदर्भ की कविता का एक ढंग मुक्तिबोध का था जहाँ वह अनेक क्रमबद्ध चित्रों की फैंटेसी के माध्यम से प्रस्तुत करते हैं ।तो दूसरा रूप रघुवीर सहाय , धूमिल , गोरख पाँडे ,वेणु गोपाल , लीलाधर जगूडी और मंगलेश डबराल का है जहाँ दलगत राजनीति से सीधे मुठभेड का आग्रह है एक अन्य ढंग सर्वेश्वर और केदारनाथ सिंह का है जहाँ दलगत राजनीति के चित्र नहीं हैं किंतु कविता के आशय अतिशय राजनीतिक हैं नागार्जुन की कविता के राजनीतिक संदर्भ प्रकृति और रागात्मक संदर्भों के साथ करूणा की अंतर्धारा से संदर्भित होते हैं ।राजनीतिक संदर्भों की कविता ने भाषा और रूपबँध लोक से भी लिए हैं और नए रूपों में भी यह कविता दिखाई दी है ।विसंगति, विडंबना और व्यंग्य विशिष्ट प्रविधि के रूप में अपनाए गए हैं ।राजनीतिक संदर्भ की कविता में कवि का आलोचनात्मक विवेक भी महत्वपूर्ण है ।राजनीतिक दृष्टि से भले ही वह कविता सीधी शिक्षा न दे किंतु कवि-कर्म और निरंकुश मानव व्यवहार की दृष्टि से उसकी क्या उपयोगिता होगी यह देखना आवश्यक है ।